इतिहास और राजनीति विज्ञान

दसवीं कक्षा

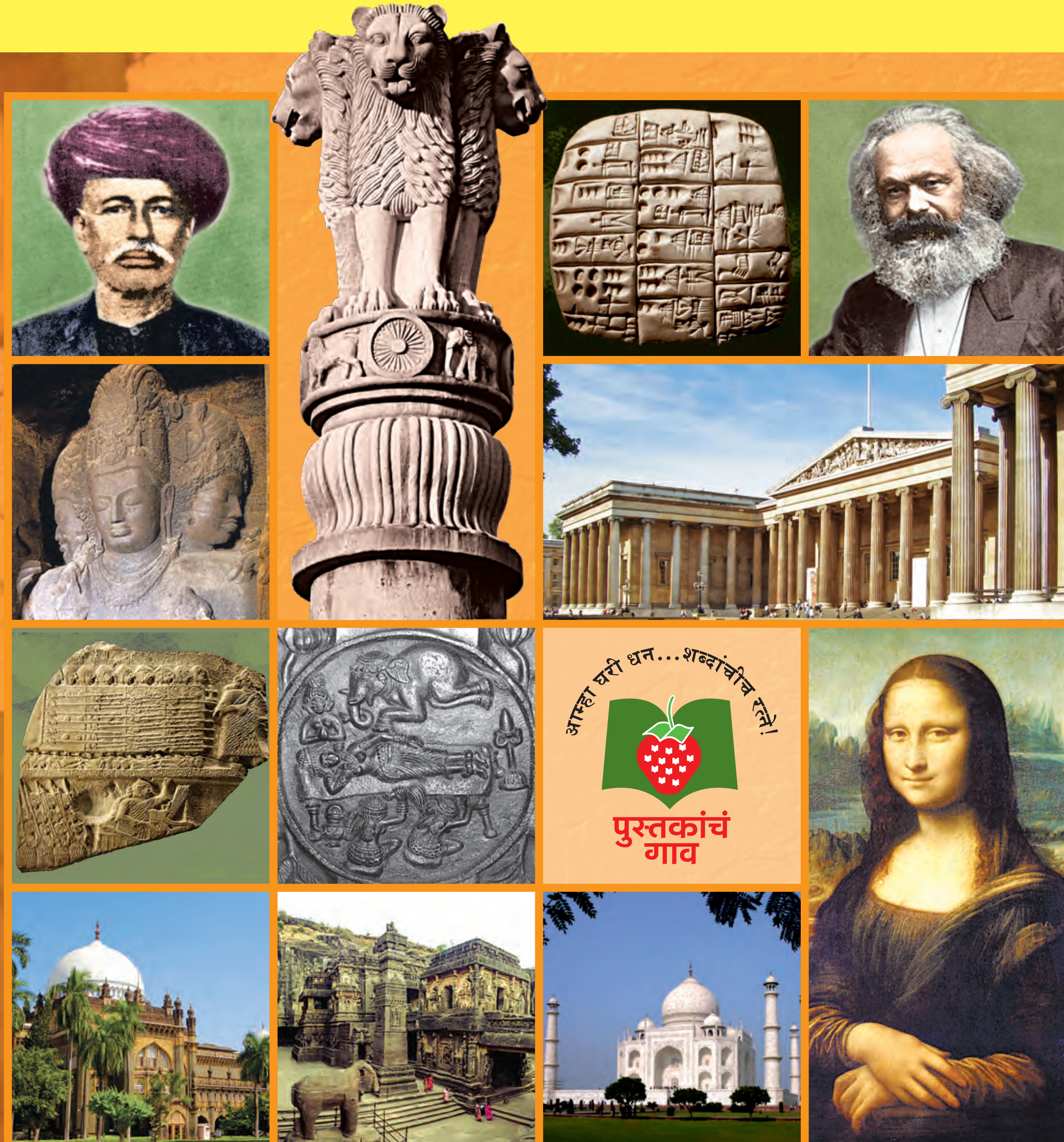

भारत का संविधान

भाग 4 क

मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य– भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करें;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखें;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे ।

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास-२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी-४ दिनांक २५.४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया। दिनांक २९.१२.२०१७ को हुई इस समिति की बैठक में सन २०१८-१९ इस कालावधि से यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई।

इतिहास और राजनीति विज्ञान

दसवीं कक्षा

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

35HG46

आपके स्मार्टफोन में 'DIKSHA App' द्वारा, पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R.Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्यपुस्तक एवं प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित Q.R.Code में अध्ययन-अध्यापन के लिए पाठ से संबंधित उपयुक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी।

प्रथमावृत्ति : २०१८
पुनर्मुद्रण : जुलाई २०२०

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती एवं अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे ४११ ००४.
इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है । इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता ।

इतिहास विषय समिति

डॉ. सदानंद मोरे, अध्यक्ष
श्री. मोहन शेटे, सदस्य
श्री. पांडुरंग बलकवडे, सदस्य
डॉ. शुभांगना अत्रे, सदस्य
डॉ. सोमनाथ रोडे, सदस्य
श्री. बापूसाहेब शिंदे, सदस्य
श्री. बाळकृष्ण चोपडे, सदस्य
श्री. प्रशांत सरूडकर, सदस्य
श्री. मोगल जाधव, सदस्य-सचिव

राजनीति विज्ञान विषय समिति

डॉ. श्रीकांत परांजपे, अध्यक्ष
प्रा. साधना कुलकर्णी, सदस्य
डॉ. प्रकाश पवार, सदस्य
प्रा. अजिंक्य गायकवाड, सदस्य
प्रा. संगीता आहेर, सदस्य
डॉ. मोहन काशीकर, सदस्य
श्री. वैजनाथ काळे, सदस्य
श्री. मोगल जाधव, सदस्य-सचिव

इतिहास और राजनीति विज्ञान अध्ययन वर्ग

श्री. राहुल प्रभू
श्री. संजय वझरेकर
श्री. सुभाष राठोड
सौ. सुनीता दळवी
डॉ. शिवानी लिमये
श्री. भाऊसाहेब उमाटे
डॉ. नागनाथ येवले
श्री. सदानंद डोंगरे
श्री. रवींद्र पाटील
सौ. रूपाली गिरकर
डॉ. मिनाक्षी उपाध्याय
डॉ. रावसाहेब शेळके
डॉ. सतीश चापले
श्री. विशाल कुलकर्णी
प्रा. शेखर पाटील
श्री. रामदास ठाकर
डॉ. अजित आपटे
डॉ. मोहन खडसे
सौ. शिवकन्या कदेरकर
श्री. गौतम डांगे
डॉ. व्यंकटेश खरात
श्री. रविंद्र जिंदे
डॉ. प्रभाकर लोंढे
डॉ. मंजिरी भालेराव
प्रा. शशि निघोजकर

लेखक

डॉ. शुभांगना अत्रे
डॉ. गणेश राऊत
डॉ. वैभवी पळसुले

भाषांतरकार

प्रा.शशि निघोजकर
प्रा.ज्ञानेश्वर सोनार

समीक्षक

डॉ.प्रमोद शुक्ल

मुखपृष्ठ व सजावट

श्री. देवदत्त प्रकाश बलकवडे

अक्षरांकन

मुद्रा विभाग, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

कागज

७० जी.एस.एम.क्रिमवोव

मुद्रणादेश

N/PB/2021-22/Qty.- 12,000

मुद्रक

M/s. Saraswati Book Company, Pune

संयोजक

श्री. मोगल जाधव
विशेषाधिकारी, इतिहास व नागरिकशास्त्र
सौ. वर्षा सरोदे
सहायक विशेषाधिकारी, इतिहास व नागरिकशास्त्र
पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे.

निर्मिति

श्री. सच्चितानंद आफळे,
मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री. प्रभाकर परब,
निर्मिति अधिकारी
श्री. शशांक कणिकदळे,
सहायक निर्मिति अधिकारी

प्रकाशक

श्री. विवेक उत्तम गोसावी, नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ,
प्रभादेवी, मुंबई-२५.

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई–बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता–पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

विद्‌यार्थी मित्रो...

आपने तीसरी कक्षा से पाँचवीं कक्षा तक इतिहास और नागरिकशास्त्र विषयों का अध्ययन 'परिसर अध्ययन' में किया है । छठी कक्षा से पाठ्‌यक्रम में इतिहास और नागरिकशास्त्र विषय स्वतंत्र रखे गए हैं और इन दोनों विषयों का समावेश एक ही पाठ्‌यपुस्तक में किया गया है । दसवीं कक्षा की पाठ्‌यपुस्तक आपके हाथ में देते हुए हमें बहुत प्रसन्नता हो रही है ।

विषय का भली-भाँति आकलन हो, विषय मनोरंजक लगे; इस दृष्टि से पाठ्‌यपुस्तक की रचना की गई है । प्रस्तुत पाठ्‌यपुस्तक के अध्ययन द्‌वारा आपको आनंद मिलेगा; ऐसा हमें लगता है । इसके लिए पाठ्‌यपुस्तक में रंगीन चित्र दिए गए हैं । पाठ्‌यपुस्तक के प्रत्येक पाठ का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें । पाठ का जो अंश/हिस्सा आपकी समझ में नहीं आएगा; उस अंश/हिस्से को अपने शिक्षक, अभिभावकों से समझ लें । चौखटों में दिया गया पाठ्‌यांश आपके ज्ञान में वृद्‌धि ही करेगा । प्रत्येक पाठ के विषय में अधिक जानकारी हेतु उपयुक्त दृश्य-श्रव्य सामग्री आपके लिए उपलब्ध होगी । इसका अध्ययन के लिए निश्चित रूप से उपयोग होगा । इसके लिए 'एप' के माध्यम से क्यू. आर.कोड का प्रयोग करें । इतिहास विषय मनोरंजक है और वह हमारा मित्र है; यदि ऐसा समझकर आपने प्रस्तुत पुस्तक का अध्ययन किया तो इस पुस्तक के प्रति आपमें निश्चित रूप से रुचि उत्पन्न होगी ।

प्रस्तुत इतिहास में 'उपयोजित इतिहास' का समावेश किया गया है । इतिहास विषय अनेक लोगों को कुतूहल का एक विषय तथा रुचि के रूप में अच्छा लगता है परंतु विद्‌यालयीन पाठ्‌यक्रम में इतिहास सही अर्थ में कितना आवश्यक है; इसकी ओर विशेष ध्यान दें तो भावी जीवन में विद्‌यार्थियों को कौन-कौन-से व्यावसायिक अवसर उपलब्ध हो सकेंगे, उनके द्‌वारा अंगीकृत किए गए व्यवसाय में क्या उन्हें उस विषय के अध्ययन का कुछ विशेष लाभ होगा, इसे लेकर अनेकों के मन में शंका होती है । आवश्यक जानकारी उपलब्ध न होने से इस शंका को दूर करना दूभर हो जाता है । यह जानकारी प्रस्तुत पाठ्‌यपुस्तक द्‌वारा 'इतिहास' विषय में उपलब्ध करा दी गई है । प्रतिदिन के जीवन से संबंधित कोई भी बात हो; व्यवसाय का कोई भी क्षेत्र हो, प्रत्येक बात का संबंधित व्यावसायिक क्षेत्र के विकास का अपना इतिहास होता है । इतिहास के इस ज्ञान का उपयोग व्यवसाय के लिए आवश्यक कौशल में वृद्‌धि करने हेतु किया जा सकता है; इस बात को प्रस्तुत पाठ्‌यपुस्तक में स्पष्ट किया गया है ।

राजनीति विज्ञान के विभाग में 'भारतीय संविधान की प्रगति' के विषय में जानकारी दी गई है । इसमें चुनाव प्रक्रिया की जानकारी, राष्ट्रीय और प्रादेशिक स्तर पर प्रमुख राजनीतिक दल, उनकी भूमिकाएँ, लोकतंत्र को सक्षम बनाने वाले सामाजिक एवं राजनीतिक आंदोलन तथा भारतीय लोकतंत्र के सम्मुख उपस्थित चुनौतियों को लेकर विचार-विमर्श किया गया है । इस नई भूमिका को स्वीकार करने के लिए विद्‌यार्थियों को सक्षम करना आवश्यक है और इसके लिए पाठ्‌यपुस्तक का पाठ्‌यांश उपयोगी सिद्‌ध होगा ।

(डॉ.सुनिल मगर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्‌यपुस्तक निर्मिति एवं
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

पुणे
दिनांक : १८ मार्च २०१८, गुढ़ीपाड़वा
भारतीय सौर दिनांक : २७ फाल्गुन १९३९

– शिक्षकों के लिए –

एक कुतूहल का विषय और रुचि के रूप में 'इतिहास' विषय अनेकों की पसंद का विषय होता है परंतु यह विषय विद्यालयीन पाठ्यक्रम में वास्तव में कितना आवश्यक है ? इस विषय पर ध्यान केंद्रित करें तो भावी जीवन में विद्यार्थियों के लिए कौन-से व्यावसायिक अवसर उपलब्ध हो सकेंगे अथवा उनके द्‌वारा अंगीकृत किए जाने वाले व्यवसाय में क्या उन्हें इस विषय के अध्ययन का कुछ विशेष लाभ प्राप्त होगा ? इस प्रकार की शंकाएँ असंख्यों के मन में होती हैं परंतु आवश्यक जानकारी उपलब्ध न होने से ऐसी शंकाओं का निराकरण करना कठिन हो जाता है । वह आवश्यक जानकारी इस पाठ्यपुस्तक द्‌वारा उपलब्ध करा दी गई है ।

इतिहास की अध्ययन पद्‌धति और इतिहास लेखन से क्या तात्पर्य है ? इतिहास लेखन का इतिहास जैसी बातों की जानकारी अब तक केवल महाविद्‌यालयीन और विश्वविद्‌यालयीन स्तर पर करा दी जाती थी । इन बातों का समावेश विद्‌यालयीन पाठ्यक्रम में नहीं किया गया था । अतः इतिहास की वैज्ञानिक पद्‌धति से क्या तात्पर्य है; इस विषय में विद्‌यार्थियों के मन में उत्पन्न होने वाले संभ्रम की संभावना को ध्यान में रखकर प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में इतिहास लेखन विषय पर प्रथम दो पाठों में सरल रूप में संक्षिप्त जानकारी दी है ।

इतिहास मात्र विभिन्न राजसत्ताओं और उनके बीच हुए युद्‌धों तथा महान योद्‌धाओं की वीरता की कहानियों तक सीमित नहीं होता है; इस तथ्य का बोध विद्‌यालयीन विद्‌यार्थियों को इतिहास की पाठ्यपुस्तकों द्‌वारा समय-समय पर कराया गया है। फिर भी इन बातों के पारवाला इतिहास अर्थात निश्चित रूप से क्या है और इतिहास का वर्तमान के साथ संबंध किस प्रकार का होता है; इसका आकलन कर लेने का अवसर विद्‌यालयीन विद्‌यालयों को प्राप्त नहीं हो रहा था । इस तथ्य को विशेष रूप से आँखों के सामने रखकर दसवीं कक्षा के पाठ्यक्रम का ढाँचा खींचा गया है । इसी रूप में प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक के पाठों का नियोजन किया गया है ।

वास्तव में देखा जाए तो इतिहास और प्रतिदिन के व्यावहारिक जीवन के बीच अटूट संबंध है । इस बात का 'उपयोजित इतिहास' अथवा 'जन-जन का इतिहास' स्पष्ट करता है । यह नवीन ज्ञान शाखा है और विगत कुछ दशकों में विकसित होती जा रही है । विदेश के विश्वविद्‌यालयों में इस विषय के पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं । इस पाठ्यपुस्तक में इस नवीन विषय की जानकारी देने के साथ-साथ यह भी बताया गया है कि विभिन्न व्यवसायों की मूल्यवर्धित सेवाओं के लिए इतिहास के गहन अध्ययन की तथा ऐसे अध्ययनशील विशेषज्ञ इतिहासकार की आवश्यकता किस प्रकार अनुभव होती है । इसके लिए आवश्यक पाठ्यक्रम और वे पाठ्यक्रम जहाँ पढ़ाए जाते हैं; ऐसे संस्थानों की जानकारी दी गई है ।

प्रतिदिन के जीवन की कोई भी बात हो; व्यवसाय का कोई भी क्षेत्र हो; उस बात का अथवा उस व्यावसायिक क्षेत्र का स्वयं का इतिहास होता है और उस इतिहास के ज्ञान का उपयोग व्यवसाय के उस क्षेत्र के लिए आवश्यक कौशल वृद्‌धि करने हेतु होता है; यह तथ्य प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में स्पष्ट किया गया है ।

दसवीं कक्षा के विद्‌यार्थी महाविद्‌यालय की दहलीज पर प्रवेश पाने के लिए खड़े होते हैं । इन विद्‌यार्थियों के मन में स्नातक उपाधि पाने और भावी जीवन की प्रगति हेतु अनुकूल व्यवसाय चुनने की उचित दिशा को तय करने के विषय में अनेक प्रश्न रहते हैं । विशेषतः विद्‌यार्थियों में इतिहास विषय में प्रवीणता प्राप्त करने की इच्छा रहती है परंतु इस संबंध में विद्‌यार्थियों को प्रोत्साहनपर मार्गदर्शक पुस्तकें कठिनाई से उपलब्ध होती हैं । उस कमी को प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक द्‌वारा पूरा करने का प्रयास किया गया है । इसके लिए उपयुक्त और रोचक जानकारी और समीचीन चित्रों का भी समावेश किया गया है ।

विद्‌यालयीन स्तर पर नागरिकशास्त्र और राजनीति विज्ञान विषय के पाठ्यक्रम में सामाजिक-राजनीतिक परिसर का परिचय, से लेकर अंतर्राष्ट्रीय संबंध और हमारे देश का राजनीतिक स्वरूप; इतना व्यापक पाठ्यांश समाविष्ट किया गया है । इस पाठ्यांश के अध्ययन उद्‌दिष्टों को आप अध्यापन द्‌वारा साध्य करेंगे ही परंतु इसी के साथ दसवीं कक्षा में वर्ग की अंतरक्रियाएँ मात्र जानकारी देने वाली न हों अपितु उन्हें प्रतिदिन की घटनाओं और गतिविधियों से जोड़ा जाना अपेक्षित है । भारतीय लोकतंत्र के सम्मुख चुनौतियाँ निश्चित रूप से हैं परंतु लोकतंत्र को दृढ़ करने वाली परंपराएँ भी बड़ी मात्रा में निर्माण हुई हैं । इसके द्‌वारा वस्तुनिष्ठ विवेचन, संवाद और विचार-विमर्श किया जा सकता है । छोटे समूहों में विद्‌यार्थियों को स्वयं को अभिव्यक्त करने का अवसर मिलना चाहिए ।

पाठ्यपुस्तक में पाठ्यांश की रचना इस प्रकार की गई है जिससे विद्‌यार्थियों में कुछ नया सीखने की ऊर्जा उत्पन्न हो सके । इसको शिक्षक और अभिभावक संपूर्ण समर्थन देंगे; इसमें कोई संदेह नहीं है ।

क्षमता विधान

क्र.	घटक	क्षमताएँ
१.	प्राचीन से लेकर आधुनिक कालखंड के इतिहास की विश्लेषणात्मक समीक्षा	• इतिहास लेखन की परंपरा को स्पष्ट करना । • इतिहास लेखन के विज्ञान के विकसित होने में अनेक पश्चिमी विचारकों का योगदान रहा है, इसका बोध करना । • भारतीय इतिहास के विभिन्न कालखंडों का विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन करना आना । • भारत तथा विश्व में हुए ऐतिहासिक शोधकार्यों की जानकारी प्राप्त करना । • इतिहास विशुद्ध विज्ञान का अध्ययन विषय है; यह बताना आना ।
२.	उपयोजित इतिहास	• उपयोजित इतिहास की अवधारणा को बता पाना । • इतिहास की विभिन्न विषयों में तथा मनुष्य के जीवन में निहित उपयोगिता को समझना । • ऐतिहासिक घटनाओं की समकालीनता को पहचानना आना । • ऐतिहासिक घटनाओं की विविध विचारधाराओं की पहचान करना आना ।
३.	प्रसार माध्यम और इतिहास	• विभिन्न प्रसार माध्यमों एवं इतिहास के बीच के सहसंबंध को पहचान सकना। • विभिन्न प्रसार माध्यमों में उपलब्ध होनेवाली जानकारी के आधार पर तटस्थ रूप से स्वयं का ऐतिहासिक दृष्टिकोण विकसित कर सकना । • संबंधित व्यवसाय के व्यावसायिक क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त करना ।
४.	मनोरंजन के माध्यम और इतिहास	• मनोरंजन की आवश्यकता को स्पष्ट करना आना । • प्रसार माध्यमों और इतिहास के पारस्परिक संबंधों का विश्लेषण करना आना । • मनोरंजन के माध्यमों में होने वाले परिवर्तनों को समझ लेना ।
५.	कला, खेल और साहित्य क्षेत्र तथा इतिहास	• भारत की विविध कलाओं की जानकारी बताना आना । • विभिन्न खेलों में भारतीयों द्‌वारा किए गए सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शनों के प्रति गर्व का अनुभव करना और उनके द्‌वारा प्रेरणा ग्रहण करना । • कला, खेल और साहित्य क्षेत्र के विभिन्न घटकों की जानकारी बताना । • कला, खेल और साहित्य के ऐतिहासिक उपयोजन को स्पष्ट करना आना ।
६.	पर्यटन और इतिहास	• पर्यटन क्षेत्र में इतिहास उपयोगी होता है; इसका बोध करना । • हमारे देश में उपलब्ध पर्यटन क्षेत्र के अवसरों को स्पष्ट करना आना । • पर्यटन के कारण अनेकों के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध होते हैं; इसे स्पष्ट करना आना । • इतिहास और पर्यटन के बीच के सहसंबंध को समझना ।
७.	इतिहास और अन्य क्षेत्र	• इतिहास के अध्ययन में संग्रहालय और पुस्तकालय का जो महत्व है; उसे बताना आना । • इतिहास के अध्ययन द्‌वारा वस्तुनिष्ठ विश्लेषण करना संभव होता है; यह भावना विकसित करना । • इतिहास का समन्वय अन्य अध्ययन क्षेत्रों के साथ स्थापित करना ।

अनुक्रमणिका

उपयोजित इतिहास

क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
१.	इतिहास का लेखन : पश्चिमी परंपरा	१
२.	इतिहास का लेखन : भारतीय परंपरा	७
३.	उपयोजित इतिहास..........................	१५
४.	भारतीय कलाओं का इतिहास	२२
५.	प्रसार माध्यम और इतिहास..................	३२
६.	मनोरंजन के माध्यम और इतिहास............	३९
७.	खेल और इतिहास	४६
८.	पर्यटन और इतिहास........................	५२
९.	ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण	५९